युगों युगों से चलती आयी, सहकारिता की धारा।

युगों युगों से चलती आयी, सहकारिता की धारा ।
इससे ही समृद्ध हुआ है, सारा राष्ट्र हमारा ।।ध्रु।।

संगच्छध्वं संवदध्वं, वेदों में हमने पाया ।
परिपाटी यह पूर्वकाल की, इससे ही अमृत पाया।
एक सूत्र ने विश्व जगत को, दिया स्नेह सहारा।।1।।

पिछड़े वनवासी वंचित, बंधु सहोदर है अपने ।
नये नये उद्योग संवारे, पूर्ण करें सबके सपने ।
सहकारी जीवन से होगी, समरस जीवन धारा ।।2।।

नारी का सम्मान यहाँ की, गौरवशाली परम्परा ।
स्वयं सहायता संस्कारों से, पोषित होगी पुण्यधरा ।
सबल सहकार के आदर्शों से, विकसे देश हमारा ।।3।।

इससे ही समृद्ध हुआ है, सारा राष्ट्र हमारा ।।

नव रचना साकार हो! समाज में सहकार हो!

नव रचना साकार हो! समाज में सहकार हो!
मंगलमय, सुखमय वैभव से, भरे-भरे भण्डार हो।।ध्रु।।

मिल जुल कर सब काम करें । स्नेहयुक्त सद्भाव वरें।
शुद्ध आचरण, कर्म-तपस्या, मधुर सधा व्यवहार हो।।1।।

गुणवत्ता, कौशल्य जगायें । सुन्दर, विकास-पथ अपनायें।
सबकी पूँजी सबके हित में, श्रेष्ठ उदात्त विचार हो।।2।।

शोषण ना हो ना अन्याय । अवसर सबको मिलता जाय ।
भारत के उत्कृष्ट रुप का, जग में मुक्त विहार हो।।3।।

अर्थ-नीतियाँ विफल हो रही । मानवता विश्वास खो रही।
सेवा में 'सहकार भारती', जन-जन का आधार हो।।4।।